ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गांधी ने जो काम राजनीति के माध्यम से किया, प्रेमचंद ने वही काम साहित्य के द्वारा किया : प्रो. हितेंद्र मिश्र

हिंदी विश्वविद्यालय में प्रेमचंद की 146वीं जयंती पर विशेष व्याख्यान में साहित्य, समाज और राष्ट्रीयता के विकास में प्रेमचंद के योगदान पर हुआ गंभीर विमर्श

वर्धा, 06 अगस्त 2026 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में मुंशी प्रेमचंद की 146वीं जयंती के अवसर पर 'प्रेमचंद का साहित्यिक अवदान' विषय पर विशेष व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. हितेंद्र मिश्र ने कहा कि गांधी ने जो काम राजनीति में किया, प्रेमचंद ने वही काम साहित्य में किया। प्रेमचंद ने केवल साहित्य नहीं लिखा बल्कि भारतीय समाज को देखने की दृष्टि प्रदान की। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और वंचित समाज की पीड़ा को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया। उन्होंने साहित्य को सत्ता, वैभव और कल्पना की दुनिया से निकालकर खेतों, खलिहानों, चौपालों, झोपड़ियों और सामान्य मनुष्य के जीवन तक

पहुँचाया। यही कारण है कि प्रेमचंद आज भी भारतीय समाज की सबसे प्रासंगिक आवाज़ हैं। वे हमारे अतीत ही नहीं बल्कि वर्तमान हैं और हम उनमें अपना भविष्य भी देख सकते हैं। प्रेमचंद सजग लेखक थे। वे विश्व साहित्य में मानक बनकर खड़े नजर आते हैं।

प्रो. मिश्र ने कहा कि बाजारवाद के दौर में साहित्य की गंभीरता लगातार कम होती जा रही है जबकि प्रेमचंद का साहित्य धैर्य, गंभीर अध्ययन, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदना का पाठ पढ़ाता है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे प्रेमचंद के साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के दस्तावेज़ के रूप में पढ़ें। उन्होंने कहा कि जब तक समाज में अन्याय, शोषण और विषमता मौजूद है, तब तक प्रेमचंद हमारे समकालीन बने रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की। उन्होंने विकसित भारत की अवधारणा को प्रेमचंद के साहित्य से जोड़ते हुए कहा कि प्रेमचंद का साहित्य आज भी मानवीय मूल्यों और सामाजिक चेतना का सशक्त आधार है। प्रेमचंद अपने समय से आगे देखने वाले युगद्रष्टा साहित्यकार थे। 'सोजे वतन' और 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' जैसी उनकी तमाम रचनाएं हमें बताती हैं कि वे राष्ट्रीय चेतना के सच्चे अर्थों में संवाहक थे। प्रो. शर्मा ने प्रेमचंद द्वारा दी गई साहित्य की प्रसिद्ध परिभाषा 'साहित्य जीवन की आलोचना है' का उल्लेख करते हुए कहा कि यह कथन आज भी उतना ही सार्थक है, जितना उनके समय में था। वस्तुतः प्रेमचंद का साहित्य आज भी सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की सबसे विश्वसनीय अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद ने जीवन के मर्म को जाना और सहजता से उसे प्रस्तुत किया। यही उन्हें महान रचनाकार बनाता है। यह आयोजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के छह वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2026' के तहत किया गया।

महादेवी वर्मा सभागार में आयोजित कार्यक्रम में स्वागत एवं प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए हिंदी साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अवधेश कुमार ने कहा कि प्रेमचंद ने कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार, पत्रकार, संपादक, अनुवादक और विचारक के रूप में साहित्य, भाषा, पत्रकारिता, समाज, राजनीति और संस्कृति से जुड़े प्रश्नों पर गंभीर वैचारिक हस्तक्षेप किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' ने

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website:** www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

किया तथा डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का आरंभ प्रेमचंद की प्रतिमा पर पुष्पांजलि, दीप प्रज्ज्वलन तथा कुलगीत गायन से हुआ। इस आयोजन में बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी-विद्यार्थी तथा साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

गांधींनी जे कार्य राजकारणाच्या माध्यमातून केले, तेच कार्य प्रेमचंदांनी साहित्यातून केले : प्रो. हितेंद्र मिश्र

हिंदी विश्वविद्यालयात प्रेमचंद यांच्या 146 व्या जयंतीनिमित्त विशेष व्याख्यान; साहित्य, समाज आणि राष्ट्रीयतेच्या विकासातील प्रेमचंद यांच्या योगदानावर गंभीर चर्चा

वर्धा, 06 ऑगस्ट 2026 : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात मुंशी प्रेमचंद यांच्या 146 व्या जयंतीनिमित्त 'प्रेमचंद यांचे साहित्यिक योगदान' या विषयावर विशेष व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी प्रमुख वक्ते म्हणून केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नवी दिल्लीचे संचालक प्रो. हितेंद्र मिश्र म्हणाले की, गांधींनी जे कार्य राजकारणाच्या माध्यमातून केले, तेच कार्य प्रेमचंदांनी साहित्यातून केले. प्रेमचंदांनी केवळ साहित्य लेखन केले नाही, तर भारतीय समाजाकडे पाहण्याची एक नवी दृष्टी दिली. प्रो. मिश्र म्हणाले की, प्रेमचंदांनी शेतकरी, कामगार, महिला, दलित आणि वंचित समाजाच्या वेदनांना आपल्या साहित्याच्या केंद्रस्थानी स्थान दिले. त्यांनी साहित्याला सत्ता, वैभव आणि काल्पनिक जगातून बाहेर काढून शेत-खळ्यांपर्यंत, चौपालांपर्यंत, झोपड्यांपर्यंत आणि सामान्य माणसाच्या जीवनापर्यंत पोहोचवले. त्यामुळेच प्रेमचंद आजही भारतीय समाजाचा सर्वाधिक प्रासंगिक आवाज आहेत. विद्यार्थ्यांनी प्रेमचंदांच्या साहित्याकडे सामाजिक परिवर्तनाच्या दस्तऐवजाच्या रूपात पाहावे, असे आवाहन त्यांनी केले. समाजात जोपर्यंत अन्याय, शोषण आणि विषमता अस्तित्वात आहे, तोपर्यंत प्रेमचंद आपले समकालीन राहतील, असेही त्यांनी सांगितले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विश्वविद्यालयाच्या कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा होत्या. विकसित भारताच्या संकल्पनेशी प्रेमचंदांच्या साहित्याचा संबंध जोडताना त्या म्हणाल्या की, प्रेमचंदांचे साहित्य आजही मानवी मूल्ये आणि सामाजिक चेतनेचा सशक्त आधार आहे. प्रेमचंद हे आपल्या काळाच्या पुढे पाहणारे युगद्रष्टा साहित्यिक होते. 'सोजे वतन' आणि 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' यांसारख्या त्यांच्या अनेक रचना त्यांच्या राष्ट्रीय चेतनेच्या संवाहक असण्याची साक्ष देतात. प्रो. शर्मा यांनी प्रेमचंदांनी साहित्याची दिलेली प्रसिद्ध व्याख्या 'साहित्य जीवनाची आलोचना आहे' याचा उल्लेख करत सांगितले की, हे विधान आजही त्यांच्या काळाइतकेच सार्थक आहे. वस्तुतः प्रेमचंदांचे साहित्य आजही सामाजिक न्याय, लोकशाही मूल्ये आणि राष्ट्रीय पुनर्जागरणाची सर्वात विश्वासार्ह अभिव्यक्ती आहे. प्रेमचंदांनी जीवनाचे मर्म जाणून ते सहजतेने मांडले, हीच गोष्ट त्यांना महान रचनाकार बनवते.

हा कार्यक्रम महादेवी वर्मा सभागृहात राष्ट्रीय शिक्षण धोरण-2020 च्या सहा वर्षांच्या पूर्ततेनिमित्त आयोजित 'अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2026' अंतर्गत आयोजित करण्यात आला होता. स्वागत व प्रास्ताविक करताना हिंदी साहित्य विभागाचे अध्यक्ष प्रो. अवधेश कुमार म्हणाले की, प्रेमचंद यांनी कथाकार, कादंबरीकार, निबंधकार, पत्रकार, संपादक, अनुवादक आणि विचारवंत म्हणून साहित्य, भाषा, पत्रकारिता, समाज, राजकारण आणि संस्कृतीशी संबंधित प्रश्नांवर गंभीर वैचारिक लेखन केले.

कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' यांनी केले, तर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी यांनी आभार मानले. कार्यक्रमाची सुरुवात प्रेमचंद यांच्या प्रतिमेला पुष्पांजली अर्पण करून, दीपप्रज्वलन आणि कुलगीत गायनाने झाली. या आयोजनाला मोठ्या संख्येने शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी आणि साहित्यप्रेमी उपस्थित होते.